ISSN 2348-3857

स्वामी विवेकानन्द का भारतीय शिक्षा दर्शन में योगदान

Research Reinforcement
ISSN 2348-3857

डॉ. विष्णु कुमार
सहायक आचार्य
शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ, नागौर (राजस्थान)

शोध सारांश

किसी भी व्यक्ति का चरित्र केवल उसकी प्रवृत्तियों का समग्र उसके मानस के झुकाव का समग्र है, जैसे-जैसे सुख और दुःख उसकी आत्मा के सामने आते हैं, वे उस पर विभिन्न चित्र छोड़ जाते हैं'' और इन संयुक्त संस्कारों के परिणाम को ही मनुष्य का चरित्र कहा जाता है। भारतीय शिक्षा शास्त्रियों ने प्राचीन काल से ही शिक्षा में धार्मिक और आध्यात्मिक तत्व पर जोर दिया है फिर विवेकानद तो स्वामी और महात्मा ही थे। भारत के सन्तों की परम्परा में उनका अद्वितीय स्थान है और देश के बाहर उनको जो ख्याति मिली उसका दूसरा उदाहरण नहीं है। विवेकानन्द ने धार्मिक शिक्षा पर विशेष तौर से जोर दिया है। पश्चिम के विज्ञान का समर्थन करते हुए भी वे धर्म शिक्षा आवश्यक मानते हैं, क्योंकि मूल रूप से दोनों का आधार एक ही है। उन्होंने तो यहां तक कह दिया है कि विभिन्न विज्ञानों के शिक्षण के साथ-साथ ही और उन्ही के माध्यम से धर्म की शिक्षा भी दी जा सकती है। उनको अपने शब्दों में ''आधुनिक विज्ञान की सहायता से उनके ज्ञान को जगायें। उनका इतिहास, भूगोल, विज्ञान और साहित्य की शिक्षा दीजिए और उनके साथ-साथ इनके माध्यम से धर्म के मान सम्मान बताइये।

संकेताक्षर : *अन्तर्निहित पूर्णता, प्रशिक्षण, स्त्री शिक्षा, गुरुकुल प्रथा*

महापुरुषों का जीवन उस संगीत के समान है जिसके समाप्त होने पर उसकी धुन गूंजती है। श्रीकृष्ण ने गीता में यही कहा -''धर्म का ह्रास तथा पाप की प्रबलता होने पर मैं मानव जाति के कल्याण हेतु अवतार लिया करता हूँ। नाशवान जगत में सर्वत्र पाप की वृद्धि या संस्कार के नवनिर्माण की आवश्यकता होने पर सच्चे सुधारक और पथ प्रदर्शक प्रकट हुए, जिनके आत्मबल ने सामयिक परिस्थिति पर विजय पाई तथा अल्प समय में हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तथा अटक से कटक तक विजय पताका फहराई। देश में पुनः वह चमत्कार घटित हुआ, जिसने भारतवर्ष तथा भारतीय संस्कृति को आज तक जीवित रखा। आज फिर समुद्र मन्थन जैसा वातावरण चल रहा है, मानवीय चेतना का मन्थन होकर विष निकल रहा है, मानव की कमजोरी, निर्बलता और संकुचित मनोवृति का विष सामने आ रहा है, ऐसे में भगवान शंकर जैसे महापुरुष की आवश्यकता है कि प्रजातन्त्र के हर व्यक्ति का विषपान कर, समुद्र मन्थन से निकले रत्न और अमृत मानव जाति के सामने रखें। गुलामी तथा परतंत्रता के कारण भारतीय जनमानस अत्यन्त हताश, चेतनाहीन और मृत प्राय हो गया था और अपनी अस्मिता खो बैठा था।

अंग्रेजों ने अपनी कूटनीति से सम्पूर्ण भारत पर अपना आधित्य स्थापित कर लिया था। राजनैतिक वर्चस्व के साथ-साथ अपनी भाषा ओर संस्कृति का प्रभाव भी छोड़ रहे थे। हिंदू अपने कर्म-काण्डों, रूढ़ियों तथा परम्पराओं में फंसे अपने को निरुपाय तथा निस्सहाय महसूस कर रहे थे। भारतीय जनता अपने को भ्रमित महसूस कर रही थी, उसे यह समझ में नहीं आ रहा था कि भारतीय संस्कृति श्रेष्ठ है या पाश्चात्य संस्कृति। गुलामी के कारण भारतीय जनता, अपने धर्म, पराक्रम, शौर्य तथा कर्त्तव्य को भी भूल चुके थे। हम अपने पूर्वजों की धार्मिक तथा सांस्कृतिक धरोहर को भूल चुके थे। हमारी संस्कृति कितनी उदात्त तथा भव्य है इससे भी हम अपरिचित थे। स्वामी विवेकानन्द पहले व्यक्ति है जिन्होंने भारत की निर्जीव तथा मृतप्राय जनता में नए प्राण फूंके और ''उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान्त बोधत'' का उद्घोष किया। इस दिव्य संदेश से स्वामी जी ने भारतीय जनता को झकझोर दिया और जागरण का मंत्र फूंका। हिन्दू धर्म के उदात्त तथा प्रगतिशील विचारों को

Scanned by CamScanner